नासदीय सूक्त | Nasadiya Sukta

Nasadiya Sukta Sanskrit Text: सम्पूर्ण संस्कृत पाठ

॥ नासदीय सूक्तम् ॥

ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त १२९

श्लोक १

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् ।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम् ॥ १॥

श्लोक २

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः ।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किञ्चनास ॥ २॥

श्लोक ३

तम आसीत्तमसा गूहळमग्रे प्रकेतं सलिलं सर्वाऽइदम् ।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत् तपसस्तन्महिनाजायतैकम् ॥ ३॥

श्लोक ४

कामस्तदग्रे समवर्ततधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् ।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा ॥ ४॥

श्लोक ५

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत् ।
रेतोधा आसन्महिमान आसन् स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥ ५॥

श्लोक ६

को अद्धा वेद क इह प्र वोचत् कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः ।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव ॥ ६॥

श्लोक ७

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न ।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन् त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥ ७॥

Nasadiya Sukta In English: Transliteration (Roman Script)

Verse 1

nasad asin no sad asit tadanim
nasid rajo no vyoma paro yat
kim avarivah kuha kasya sarmann
ambhah kim asid gahanam gabhiram

Verse 2

na mrtyur asid amrtam na tarhi
na ratrya ahna asit praketah
anid avatam svadhaiya tad ekam
tasmad dha anyam na parah kim canasa

Verse 3

tama asit tamasa guhalham agre
apraketam salilam sarvam a idam
tuchyenabhu apihitam yad asit
tapasas tan mahina ajayata ekam

Verse 4

kamas tad agre sam avartatadhi
manaso retah prathamam yad asit
sato bandhum asati nir avindan
hrdi pratisya kavayo manisa

Verse 5

tirasino vitato rasmir esam
adhah svid asid upari svid asit
retodha asan mahimana asan
svadha avasthat prayatih parastat

Verse 6

ko addha veda ka iha pra vocat
kuta ajata kuta iyam visrstih
arvag deva asya visarjanena
atha ko veda yata ababhuva

Verse 7

iyam visrstir yata ababhuva
yadi va dadhe yadi va na

yo asyadhyaksah parame vyoman
so anga veda yadi va na veda

Nasadiya Sukta Meaning in Hindi: श्लोक-दर-श्लोक हिन्दी अर्थ

श्लोक १ का अर्थ:

उस समय न असत् था, न सत् था। न आकाश था, न उससे परे का कोई लोक। तब क्या किसे ढक रहा था? कहाँ था? किसके आश्रय में था? क्या कोई गहरा, अथाह जल था?

भावार्थ: सृष्टि के पूर्व की अवस्था में न अस्तित्व था, न अनस्तित्व था। न स्थान था, न आकाश। सब कुछ एक अपरिभाषित रहस्य में डूबा था।

श्लोक २ का अर्थ:

उस समय न मृत्यु थी, न अमरत्व था। रात्रि और दिन का कोई भेद नहीं था। वह एक तत्त्व, बिना वायु के, अपनी ही शक्ति से श्वास ले रहा था। उसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था।

भावार्थ: मृत्यु और अमरत्व से परे, काल और दिशा से परे, एकमात्र परम तत्त्व अपने आप में स्थित था।

श्लोक ३ का अर्थ:

आरम्भ में अन्धकार ही था, जो अन्धकार से ढका हुआ था। यह सब एक अलक्षित, अव्यक्त जल-राशि के समान था। जो शून्य से आवृत था, वह एक तत्त्व तप (ऊष्मा / ज्ञान-शक्ति) की महिमा से प्रकट हुआ।

भावार्थ: सृष्टि से पूर्व केवल तम (अन्धकार) था। ब्रह्म की तप-शक्ति से उस एक तत्त्व का आविर्भाव हुआ।

श्लोक ४ का अर्थ:

उसके पश्चात् सबसे पहले काम (इच्छा / संकल्प) प्रकट हुआ जो मन का प्रथम बीज था। ज्ञानी कवियों ने अपने हृदय की मनीषा से असत् में सत् का बन्धन खोज निकाला।

भावार्थ: सृष्टि का प्रथम बीज "काम" अर्थात् सृजन की इच्छा थी। ऋषियों ने अपनी अन्तर्दृष्टि से सत्-असत् के रहस्य को समझा।

श्लोक ५ का अर्थ:

उनकी ज्योति (रश्मि) तिरछी फैली हुई थी। क्या वह नीचे थी या ऊपर? वहाँ रेतोधा (बीज-धारण करने वाली शक्तियाँ) और महान् शक्तियाँ थीं। नीचे स्वधा (ऊर्जा) थी, ऊपर प्रयति (प्रयत्न/गति) थी।

भावार्थ: सृष्टि की प्रक्रिया में दो शक्तियाँ कार्यरत थीं। एक नीचे से ऊपर उठती ऊर्जा, दूसरी ऊपर से नीचे आती चेतना।

श्लोक ६ का अर्थ:

कौन वास्तव में जानता है? कौन यहाँ बता सकता है कि यह सृष्टि कहाँ से आई और कैसे उत्पन्न हुई? देवता भी इस सृष्टि के बाद आए। तो फिर कौन जानता है कि यह सब कहाँ से आया?

भावार्थ: यह प्रश्न स्वयं देवताओं को भी नहीं पता, क्योंकि वे भी सृष्टि के बाद अस्तित्व में आए।

श्लोक ७ का अर्थ:

यह सृष्टि जहाँ से उत्पन्न हुई, चाहे उसने इसे बनाया हो या न बनाया हो। जो परम आकाश में इस सृष्टि का साक्षी है, वही जानता है, या शायद वह भी नहीं जानता।

भावार्थ: ऋषि यहाँ अत्यन्त विनम्रता से कहते हैं कि परम सत्ता स्वयं भी इस सृष्टि के रहस्य को जानती है या नहीं, यह भी निश्चित नहीं।